भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
समाचार पत्रिका

अप्रैल - जून, 2026 hindicell@iiti.ac.in **द्वादश अंक**

जलवायु निगरानी एप्लिकेशन विकसित



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर के शोधकर्ताओं ने भारत के प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों (केबीए) में अत्यधिक वर्षा एवं सूखे की निगरानी के लिए एक नवीन जिला-स्तरीय एप्लिकेशन विकसित किया है। इस नवाचार का नेतृत्व संस्थान के प्रो. मनीष कुमार गोयल ने किया, जिसमें सिविल इंजीनियरिंग विभाग के श्री विजय जैन सहित शोध दल के सदस्य शामिल हैं। यह एप्लिकेशन वर्ष 1951 से 2022 तक के वर्षा संबंधी चरम घटनाक्रमों एवं सूखे के पैटर्न का विश्लेषण कर संवेदनशील क्षेत्रों और जलवायु जोखिमों की पहचान करता है। भारत में 600 से अधिक प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र हैं, जो अनेक दुर्लभ एवं संकटग्रस्त प्रजातियों के महत्वपूर्ण आवास हैं। यह उपकरण जैव विविधता संरक्षण एवं जलवायु अनुकूलता से जुड़े साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में सहायक होगा। संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने इस पहल को वैज्ञानिक अनुसंधान और व्यावहारिक समाधानों के समन्वय का महत्वपूर्ण उदाहरण बताते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम बताया।

एग्रीहब ने भारतीय कृषि में एआई-संचालित परिवर्तन को दी गति

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर में स्थापित एग्रीहब – इनोवेशन हब फॉर एग्रीकल्चर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग एवं डीप लर्निंग के माध्यम से भारतीय कृषि में नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। 27 जनवरी 2025 को इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री एस. कृष्णन द्वारा उद्घाटित इस केंद्र का नेतृत्व प्रमुख अन्वेषक प्रो. अरुणा तिवारी कर रही हैं। एग्रीहब ने अब तक 21 अनुसंधान परियोजनाओं और एक स्टार्टअप को समर्थन प्रदान किया है। इनमें स्मार्ट कीटनाशक छिड़काव प्रणाली, मिट्टी के सूक्ष्मजीव परीक्षण किट, सोयाबीन रोग पूर्व चेतावनी प्रणाली, भूजल पूर्वानुमान तथा एआई-आधारित जीनोमिक्स अनुसंधान प्रमुख हैं। केंद्र में उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग सुविधा एवं एनवीडिया डीजीएक्स एच200 जीपीयू आधारित निजी क्लाउड अवसंरचना भी स्थापित की गई है। संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने कहा कि एग्रीहब एआई, आईओटी एवं जीनोमिक्स के माध्यम से किसानों के लिए व्यावहारिक समाधान विकसित कर सतत कृषि विकास को बढ़ावा दे रहा है। प्रो. अरुणा तिवारी ने अनुसंधान, उद्योग सहयोग, स्टार्टअप एवं तकनीकी नवाचार के माध्यम से भारतीय कृषि को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं सतत इंजीनियरिंग में बीटेक कार्यक्रम प्रारंभ



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर ने भारत में पहली बार पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं सतत इंजीनियरिंग (ईईएसई) में बीटेक कार्यक्रम प्रारंभ किया है। जुलाई 2026 से मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी के अंतर्गत शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में जेईई एडवांस्ड के माध्यम से 30 सीटों पर प्रवेश दिया जाएगा। पाठ्यक्रम में तीन प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं—पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं नीति, ऊर्जा प्रणाली एवं बैटरी प्रौद्योगिकी तथा जल एवं जलवायु प्रणाली। संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने इसे जलवायु विज्ञान एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र के समन्वय से भविष्य के सतत विकास विशेषज्ञ तैयार करने की महत्वपूर्ण पहल बताया। स्कूल की विभागाध्यक्ष प्रो. प्रीति शर्मा ने व्यावहारिक परियोजनाओं एवं उद्योग सहयोग आधारित शिक्षा पर जोर दिया। वहीं, मेहता फैमिली फाउंडेशन के संस्थापक श्री राहुल मेहता ने इस कार्यक्रम को भारत में सतत विकास के लिए भावी नेतृत्व तैयार करने की दूरदर्शी पहल बताया। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए जलवायु प्रौद्योगिकी, सतत अवसंरचना, ग्रीन फाइनेंस एवं पर्यावरणीय नीति जैसे उभरते क्षेत्रों में करियर के नए अवसर उपलब्ध कराएगा।

जल संरक्षण से परिसर की हरियाली में उल्लेखनीय वृद्धि

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर ने वर्षा जल संचयन, जलाशयों एवं चेक डैम जैसी वैज्ञानिक पहलों के माध्यम से परिसर की हरियाली और पारिस्थितिकीय स्थिरता को बढ़ावा दिया है। वर्ष 2021 से 2025 तक के उपग्रह-आधारित एनडीवीआई आंकड़े परिसर की वनस्पति के स्वास्थ्य एवं हरियाली में निरंतर सुधार दर्शाते हैं। विशेष रूप से वर्ष 2022 के बाद शुष्क महीनों में भी हरियाली में वृद्धि दर्ज की गई है, जो बेहतर मिट्टी की नमी एवं भूजल पुनर्भरण का संकेत है। संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने इसे पर्यावरणीय जिम्मेदारी एवं सतत परिसर विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता का उदाहरण बताया। वहीं, प्रमुख अन्वेषक प्रो. मनीष कुमार गोयल ने बताया कि उपग्रह निगरानी और वैज्ञानिक जल संरक्षण उपायों के समन्वय से वनस्पति स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन आया है। यह पहल जलवायु-अनुकूल एवं टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने का अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करती है।

युवा संगम चरण-VI के प्रतिनिधियों ने मध्य प्रदेश के राज्यपाल से की भेंट

भारत सरकार की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के अंतर्गत आईआईटी इंदौर में आयोजित युवा संगम चरण-VI के सातवें दिन, 2 जून 2026 को झारखंड के युवा प्रतिनिधियों ने मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई सी. पटेल से भोपाल में भेंट की। इस अवसर पर आईआईटी इंदौर के नोडल अधिकारी डॉ. मृगेन्द्र दुबे तथा आईआईटी (आईएसएम) धनबाद के समन्वयक डॉ. सुरेश कुमार वाई. ने राज्यपाल का सम्मान किया। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के उन प्रतिनिधियों के लिए युवा संगम टी-शर्ट का अनावरण भी किया गया, जो झारखंड की यात्रा करेंगे। डॉ. मृगेन्द्र दुबे ने कार्यक्रम की उपलब्धियों एवं अनुभवों की जानकारी दी तथा मध्य प्रदेश की यात्रा पर आधारित लघु फिल्म प्रस्तुत की। राज्यपाल ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण पर जोर दिया। इस आयोजन ने दोनों राज्यों के युवाओं के बीच सांस्कृतिक समझ, मित्रता एवं राष्ट्रीय एकता को और सुदृढ़ किया।



मध्य प्रदेश का युवा प्रतिनिधिमंडल झारखंड के लिए रवाना



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर ने 10 जून 2026 को एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के अंतर्गत युवा संगम चरण-VI के तहत मध्य प्रदेश के 50 सदस्यीय युवा प्रतिनिधिमंडल को आईआईटी (आईएसएम) धनबाद, झारखंड के लिए रवाना किया। प्रतिनिधिमंडल को संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दल में 23 पुरुष एवं 27 महिला प्रतिभागी शामिल हैं, जिनका चयन मध्य प्रदेश के 40 से अधिक जिलों से 3,200 से अधिक आवेदनों में से किया गया है। प्रतिनिधिमंडल 12 से 20 जून 2026 तक झारखंड के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं औद्योगिक स्थलों का भ्रमण करेगा। इस अवसर पर युवा संगम के नोडल अधिकारी डॉ. मृगेन्द्र दुबे भी उपस्थित रहे और पूरे भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल के साथ रहेंगे। यह पहल दोनों राज्यों के युवाओं के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान, आपसी समझ एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

चावल पकाते समय दानों के फटने का वैज्ञानिक कारण उजागर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर के शोधकर्ताओं ने चावल पकाते समय कुछ दानों के फटने, मुड़ने एवं टूटने के पीछे के वैज्ञानिक कारणों का पता लगाया है। जर्नल ऑफ फूड साइंस में प्रकाशित इस शोध का नेतृत्व डॉ. अंकुर मिगलानी, प्रो. पवन कुमार कांकर एवं डॉ. अमन खुराना ने किया। शोध में पीएचडी शोधार्थी श्री नितीन सपकाल, श्री अनूप के. आर. एवं श्री सौरभ कुमार भी शामिल रहे।अध्ययन के अनुसार, चावल के अपारदर्शी दानों में मौजूद सूक्ष्म दरारें एवं वायु रिक्त स्थान उन्हें सामान्य दानों की तुलना में लगभग 2.7 गुना तेजी से पानी अवशोषित करने में सक्षम बनाते हैं। प्रयोगों में लगभग 67 प्रतिशत चॉकी दाने पकाते समय फट गए, जबकि स्वस्थ दानों में यह आंकड़ा केवल 13 प्रतिशत रहा।संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने इसे दैनिक जीवन की सामान्य घटना को समझाने वाला महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान बताया। यह खोज चावल की गुणवत्ता मूल्यांकन, खाद्य प्रसंस्करण एवं कृषि अनुसंधान के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।



भारत इनोवेट्स 2026



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर ने 14–16 जून 2026 को फ्रांस के नीस शहर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भारत इनोवेट्स 2026 में भारत के अनुसंधान एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र का प्रतिनिधित्व किया। भारत–फ्रांस नवाचार वर्ष के अंतर्गत आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं फ्रांस के राष्ट्रपति श्री इमैनुएल मैक्रॉन ने किया। आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल में निदेशक प्रो. सुहास जोशी, अनुसंधान एवं विकास के अधिष्ठाता प्रो. अभिरूप दत्ता, सुश्री प्रियंका किम्मतकर एवं आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन की सीए सलोनी माहेश्वरी शामिल रहीं। संस्थान ने अपनी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों एवं अनुसंधान उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन ने हेल्थकेयर एवं मेडटेक क्षेत्र के समन्वयक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सहभागिता से अंतरराष्ट्रीय सहयोग, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं डीप-टेक नवाचार को नए अवसर प्राप्त हुए। निदेशक प्रो. सुहास जोशी एवं प्रो. अभिरूप दत्ता ने वैश्विक साझेदारी और अनुसंधान को व्यावहारिक समाधानों में परिवर्तित करने की संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई।

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2027

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2027 में वैश्विक स्तर पर 546वीं रैंक प्राप्त की है। इस उपलब्धि के साथ संस्थान ने अंतरराष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पहचान और सुदृढ़ की है। आईआईटी इंदौर ने 30.1 का समग्र स्कोर प्राप्त किया, जबकि साइटेशन्स प्रति फैकल्टी श्रेणी में उत्कृष्ट 97.4 अंक हासिल किए, जो संस्थान के उच्च गुणवत्ता एवं प्रभावशाली अनुसंधान को दर्शाता है। वर्ष 2009 में स्थापित आईआईटी इंदौर अभियांत्रिकी, विज्ञान, मानविकी एवं अंतर्विषयी शिक्षा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं, उद्योग सहयोग एवं अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों के माध्यम से संस्थान शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। यह उपलब्धि संस्थान के संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों तथा वैश्विक स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रतिबद्धता का परिणाम है।

आईआईटी इंदौर में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2DMTG 2026 का आयोजन



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर में 24 जून 2026 को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन “2डी मैटटेक ग्लोबल: फंडामेंटल्स टू एप्लीकेशन्स (2DMTG 2026)” का आयोजन किया गया। इसका संयुक्त आयोजन आईआईटी इंदौर, राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र (आरआरकैट), इंदौर तथा यूजीसी-डीएई कंसोर्टियम फॉर साइंटिफिक रिसर्च द्वारा किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, कुलाधिपति, होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान एवं परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ने किया। इसमें देश-विदेश के वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं उद्योग विशेषज्ञों ने द्वि-आयामी पदार्थों के अनुसंधान एवं तकनीकी अनुप्रयोगों पर विचार-विमर्श किया। सम्मेलन में 400 से अधिक शोध-सार प्राप्त हुए। संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने इसे वैज्ञानिक संवाद, अंत:विषय सहयोग एवं नवाचार को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण मंच बताया। सम्मेलन के संयोजक प्रो. रूपेश एस. देवन तथा सह-संयोजक डॉ. राम जे. चौधरी और डॉ. रविन्द्र जांगीड़ भी आयोजन में शामिल रहे।

डीप एग्रीटेक एवं एफपीओ पर कार्यशाला आयोजित

आईआईटी इंदौर के एग्रीहब द्वारा 21 अप्रैल 2026 को भारतखंड एवं सॉलिडेरिडाड के सहयोग से “कृषि का भविष्य – डीप एग्री टेक्नोलॉजी, मार्केट और एफपीओ” विषय पर पाँचवीं कार्यशाला आयोजित की गई। उद्घाटन सत्र में संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी, आईसीएआर-एनएसआरआई के निदेशक डॉ. के.एच. सिंह, सॉलिडेरिडाड के महाप्रबंधक डॉ. सुरेश मोटवानी तथा एग्रीहब की प्रमुख अन्वेषक प्रो. अरुणा तिवारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में एआई एवं आईओटी आधारित फसल परामर्श, जीनोमिक विश्लेषण, भूजल प्रबंधन तथा मृदा सूक्ष्मजीव तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। पैनल चर्चाओं में किसानों, एफपीओ एवं उद्योग प्रतिनिधियों ने कृषि नवाचार, बाजार संपर्क और डिजिटल तकनीकों को बढ़ावा देने पर विचार-विमर्श किया।



14वाँ दीक्षांत समारोह





भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर में 27 जून 2026 को 14वाँ दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के 807 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। समारोह में नीति आयोग के सदस्य एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव प्रो. अभय करंदीकर मुख्य अतिथि रहे। संस्थान के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने समारोह की अध्यक्षता की तथा निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने मेजबानी की। उपाधि प्राप्त करने वालों में 111 पीएचडी, 356 बीटेक, 146 एमटेक, 23 एमएस (रिसर्च), 102 एमएससी एवं 69 एमएसडीएसएम विद्यार्थी शामिल रहे। इस अवसर पर सात स्वर्ण पदक, आठ संस्थान रजत पदक तथा सर्वश्रेष्ठ बीटेक परियोजना पुरस्कार प्रदान किए गए। पहली बार अशोक बंसल स्मृति स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया, जो सर्वश्रेष्ठ महिला पीएचडी शोधार्थी को दिया जाता है। इस वर्ष हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी तथा रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रथम बैचों ने भी उपाधियाँ प्राप्त कीं। राष्ट्रपति स्वर्ण पदक मदन पी., अशोक बंसल स्मृति स्वर्ण पदक नबास्मिता फुकन तथा सर्वश्रेष्ठ बीटेक परियोजना पुरस्कार ध्रुव जैन को प्रदान किया गया। डॉ. के. सिवन ने विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने और संस्थान की उत्कृष्टता परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। प्रो. सुहास जोशी ने अनुसंधान, नवाचार एवं राष्ट्र की भावी आवश्यकताओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई। यह समारोह विद्यार्थियों की उपलब्धियों एवं संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता का गौरवपूर्ण अवसर रहा।

सक्षम परियोजना के अंतर्गत अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं का उद्घाटन



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर में 27 जून 2026 को एएनआरएफ-पेयर सक्षम परियोजना के अंतर्गत स्थापित अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं का उद्घाटन किया गया। इनका उद्घाटन नीति आयोग के सदस्य एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव प्रो. अभय करंदीकर तथा इसरो के पूर्व अध्यक्ष एवं संस्थान के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी एवं सक्षम परियोजना के परियोजना निदेशक प्रो. अभिरूप दत्ता उपस्थित रहे। प्रयोगशालाओं में उन्नत पदार्थ, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा प्रौद्योगिकी तथा उन्नत विनिर्माण के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु आधुनिक सुविधाएँ विकसित की गई हैं। इस दौरान प्रो. शैलेश आई. कुंडलवाल ने सेलेक्टिव लेजर मेल्टिंग एवं कॉन्टैक्ट एंगल गोनियोमीटर तथा प्रो. प्रशांत कोडगिरे ने आरटी-पीसीआर, लायोफिलाइजर एवं रियोमीटर जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं का प्रदर्शन किया। यह पहल अनुसंधान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

संस्थान अधिकारीगण

प्रोफेसर सुहास जोशी, निदेशक
प्रोफेसर श्रीवत्सन वासुदेवन, अधिष्ठाता (प्रशासन)
श्री एस. पी. होता, कुलसचिव
श्री राजेश कुमार, राजभाषा अधिकारी

राजभाषा समिति

प्रोफेसर नीरज कुमार शुक्ला, संयोजक
प्रोफेसर शरद गुप्ता, सदस्य
डॉ. अभिषेक यादव, सदस्य
सुश्री पूजी तिवारी, सदस्या
सुश्री मिताली दवे, सदस्या
श्री शिशिर कुमार, सदस्य सचिव

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
सिमरोल, खंडवा रोड, इंदौर
मध्य प्रदेश - 453552

अस्वीकरण: यह समाचारपत्रिका सामान्य जानकारी के लिए है। भविष्य में, इसे कानूनी, वित्तीय या किसी अन्य उद्देश्य के लिए संदर्भित नहीं किया जा सकता है।